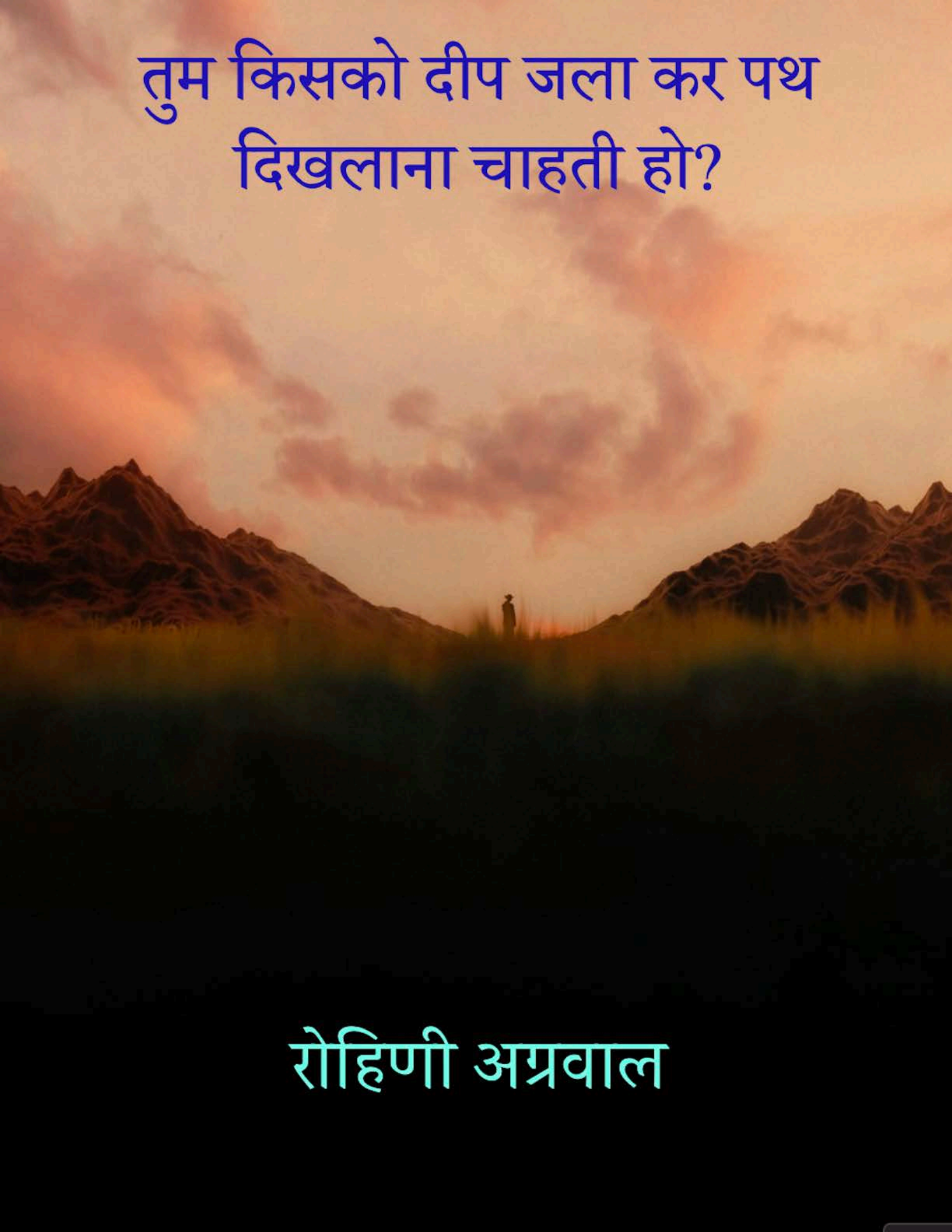

तुम किसको दीप जला कर पथ दिखलाना चाहती हो?

रोहिणी अग्रवाल

तुम किस को दीप जला कर पथ दिखलाना चाहती हो?

रोहिणी अग्रवाल

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: फ़रवरी, 2025

© रोहिणी अग्रवाल

बहुमुखी प्रतिभा के धनी रचनाकार जयशंकर प्रसाद कवि एवं नाटककार के रूप में अपनी एकाधिक रचनाओं के कारण जाने जाते हैं, किंतु कहानीकार के रूप में उनकी ख्याति का मूलाधार है, कहानी 'आकाशदीप'। 1930 के दशक में प्रकाशित कहानी संग्रह की शीर्षक कहानी 'आकाशदीप' प्रेमचंद की आदर्शोन्मुख यथार्थवादी परंपरा और जैनेन्द्रकुमार की नवविकसित मनोविश्लेषणात्मक परंपरा में सार्थक हस्तक्षेप करती है। 'आकाशदीप' प्रेम और बलिदान की कहानी है, लेकिन 'उसने कहा था' की परंपरा का विस्तार या विलोम नहीं। बेशक यहां भी 'उसने कहा था' की तरह प्रेम की टीस है; हर कालखंड के सामाजिक जीवन में लेखकीय विवेक के अनुरूप आदर्श की स्थापना की महत्वाकांक्षा भी है, लेकिन फिर भी दोनों कहानियां दो भिन्न-भिन्न अंतर्दृष्टियों से संचालित होते हुए दो भिन्न दिशाओं की ओर मुड़ जाती हैं। 'उसने कहा था' में प्रेम त्याग में गुंथ कर उपस्थित होता है और आत्मबलिदान के जरिए आत्मसार्थकता और आह्लाद की अनुभूति पाता है। 'आकाशदीप' में त्याग और बलिदान प्रेम का उदात्तीकरण अवश्य करते हैं, लेकिन अपने ही अंर्तद्वंद्व और मनोविकारों से जूझते पात्रों को मुक्त नहीं कर पाते।

जयशंकर प्रसाद मूलतः कवि और नाटककार हैं। वे प्रकृति के भीतर मनोवृत्तियों और सृष्टि के नाद के भीतर गहन दार्शनिक रहस्यों को गुनने-बूझने वाले सर्जक कलाकार हैं। इसलिए उनके यहां कहानी घटनाओं के त्वरित वेग से नहीं,

वातावरण और नाटकीय युक्तियों से खुलती है। कहानी किसी निर्दिष्ट दिशा की ओर बढ़ते जलपोत में दो बंदियों के मुक्ति-संघर्ष के साथ शुरु होती है जो सागर में हरहराते तूफान और उत्कंठित पोत-रक्षकों की लापरवाही का लाभ उठा कर स्वतंत्र हो गए हैं। हर्षातिरेक के कारण आलिंगनबद्ध होते ही उन्हें भान होता है कि वे दोनों सामान्य कैदी नहीं, स्त्री और पुरुष दो भिन्न-भिन्न लैंगिक इकाइयां हैं। बोध का यह बिंदु उन्हें - बुद्धगुप्त और चंपा - चकित भी करता है और एक-दूसरे के प्रति दुर्दमनीय आकर्षण में बांधता भी है। कहानी चूंकि नाटकीयता के चरम बिंदु से शुरु हुई है, इसलिए समुद्र की शांत लहरों पर सवार होकर दोनों का एक शांत और संभावनाशील टापू पर उतरना कथा-विकास की दृष्टि से पूर्णतया अपेक्षित है। अपनी जन्मभूमि भारतवर्ष और पड़ोसी सिंहल-बाली द्वीप से बहुत दूर जिस अपरिचित निर्जनप्राय द्वीप में बुद्धगुप्त और चपा आश्रय लेते हैं, वहां पांच वर्षों के अंतराल में उन्होंने अपनी विशाल भौतिक दुनिया खड़ी कर ली है। बुद्धगुप्त अब जलदस्यु नहीं रहा, जावा, सुमात्रा, सिंहल आदि-आदि सुदूर द्वीपों तक एक गणमान्य व्यापारी बन गया है जिसकी व्यापारिक संधियों की तूती बोलती है। चंपा के प्रति प्रणय निवेदन करते हुए उसने न केवल उस अनाम द्वीप का नामकरण उसके नाम पर किया है, बल्कि 'रानी' के रूप में उसे वहां महिमामंडित भी किया है। चंपा से विवाह कर भारतवर्ष लौट जाने का सपना संजोए हुए वह इतनी लंबी अवधि तक उसकी स्वीकृति की प्रतीक्षा कर रहा है। वह जानता है चंपा के हृदय में

शूल की तरह यह बात गड़ गई है कि उसके पिता का हत्यारा जलदस्यु और कोई नहीं, स्वयं बुद्धगुप्त है। वह अनेक बार अपने को निर्दोष साबित करने के प्रयास कर चुका है, लेकिन प्रेम के उद्दाम ज्वार के बावजूद चंपा उसके अकरणीय कृत्य को नहीं भुला पाती। अनुराग ने चंपा के हृदय से प्रतिशोध की ज्वाला शांत कर दी है, लेकिन विश्वासपूर्ण संयुक्त जीवन जीने का विश्वास वह स्वयं को नहीं दिला पाती। एक-दूसरे की दुर्बलताओं और विवशताओं के साथ अपनी-अपनी सीमाओं और महत्वाकांक्षाओं का सम्मान करते हुए वे दो पृथक् जीवन - दिशाएं चुनते हैं।

कथ्य कभी किसी कहानी को कालजयी नहीं बनाता। कथा में विन्यस्त पात्र जब अनायास अपनी मनोग्रंथियों और मनोवृत्तियों का परत-दर-परत साक्षात्कार करने लगते हैं, और उन्हीं के बीच से जीवन के सनातन प्रश्नों पर विचार करने का हौसला रखते हैं, या विचार-प्रक्रिया के कारण पाठक की चेतना को आंदोलित करते हैं, तभी कहानी जीवन की आख्यायिका न रह कर जीवन की सर्जनात्मक ताकत (लार्जर दैन लाइफ) बन जाती है। 'आकाशदीप' की सबसे बड़ी खूबी यह है कि प्रेम और घृणा के दो मूल तंतुओं के बीच निरंतर दोलायमान कहानी अनिश्चयात्मक दुर्बलता में विघटित नहीं होती। सतही तौर पर देखने से लग सकता है कि यह चंपा के त्याग और कर्त्तव्यपरायणता की कहानी है, लेकिन गहराई से देखने पर यह बुद्धगुप्त के इस सवाल